वेद

(विश्वका पहला वाङ्मय)

अनुक्रमणिका

अध्याय १

१. अध्यात्मसंबंधी एवं अन्य विषयोंपर लेखन १८
२. सामान्य लेखककी तुलनामें ऋषि-मुनियों तथा संतोंकी रचना १९
३. धर्मग्रंथोंके सत्यको समझें; उनके अर्थ न लगाएं ! २०
४. धर्मग्रंथोंकी विशेषताएं २२
५. मौलिक धर्मग्रंथ २२
६. विभिन्न धर्मग्रंथोंकी आवश्यकता २३
७. धर्मग्रंथोंकी भाषा – संस्कृत एवं उसका महत्त्व २३
८. ग्रंथोंके वाङ्मयीन प्रकार २४
९. रचनाकाल २५
९ अ. युगानुसार ९ आ. ऐतिहासिक दृष्टिकोणसे २५
१०. धर्मग्रंथ एवं दिशा २६
११. भारतमें अध्यात्मशास्त्रके अनेक मंत्र एवं धर्मग्रंथोंके तत्त्वज्ञानको गुप्त क्यों रखा गया ? २६
१२. धर्मग्रंथोंका शुद्धिकरण २८
१३. धर्मग्रंथ घरमें संग्रहित करनेका महत्त्व २८

अध्याय २

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ३१
२. समानार्थी शब्द – श्रुति ३१

३. निर्माता ३१
* अपौरुषेय * ईश्वर अथवा प्रजापति ३२
४. उद्देश्य ३४
५. महत्त्व एवं विशेषताएं ३४
* वेदाध्ययनका महत्त्व * विश्वका प्रथम वाङ्मय ३६
६. वेदविभाजन ४०
* ऋग्वेद * यजुर्वेद * सामवेद * अथर्ववेद ४४
७. वेदोंके विभाग ५८
* संहिता * ब्राह्मण (ब्राह्मणग्रंथ) * आरण्यक * उपनिषद् ५८
८. वेदांग ७१
* व्याकरण * निघंटु एवं निरुक्त * छंद * ज्योतिष ७४
९. दशग्रंथ ७५
१०. वेदोंका अर्थ समझ लेना ७५
११. वेदोंकी रक्षा एवं अध्ययन ७९
१२. वैदिक देवता ८०
१३. वेद एवं साधनाकांड ८१
१४. वेदोंसे संबंधित वाणी एवं उनका स्थान ८२
१५. वेदकालीन संस्कृति ८२
१६. वेदकालीन पारिवारिक जीवन ८३
१७. उपवेद ८३

मनोगत

'सत्यं वद, धर्मं चर' का कथन प्राचीन हिन्दू संस्कृतिद्वारा मनुष्यकी सर्वांगीण ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति एवं समाजके सर्वव्यापी उत्थानके लिए प्रदान किया गया मूलमंत्र है । धर्म और जीवनका आपसी तालमेल बना रहे, इस हेतु शाश्वत एवं चिरंजीवी धर्मज्ञानकी आवश्यकता होती है । प्राचीन ऋषि-मुनियोंने कठोर तपश्चर्या कर समग्र मानवजातिके लिए कल्याणकारी सिद्ध होनेवाले,

ईश्वर प्रतिपादित धर्मको अपने अतींद्रिय ज्ञानसे अनुभव किया और उसका वेद, उपनिषद्, दर्शन, स्मृति इत्यादि ग्रंथोंके रूपमें जतन किया । धर्मके विषयपर जो लेखन है, वह ब्रह्मसे संबंधित है । ब्रह्म अनादि-अनंत है, इस कारण ब्रह्मसे संबंधित लेखन भी अनंत काल टिकता है; इसलिए हमारे धर्मग्रंथ कालपर मात करनेवाले सिद्ध हुए हैं । ईश्वरप्राप्तिकी अनुभूति धर्मका अंतिम ध्येय है । इसी अनुभूतिको साक्षात करनेकी दृष्टिसे आत्मा-जगत-ईश्वर इत्यादिसे संबंधित तात्त्विक विचारोंके साथ धर्मविहित आचार-विचार, कर्त्तव्यकर्म इत्यादि धर्माचरणकी जानकारी होना आवश्यक है । धर्मग्रंथोंके माध्यमसे इन दोनोंका ज्ञान होता है । भक्तिप्रधान वाङ्मयके अध्ययनसे ईश्वरके प्रति भक्ति एवं श्रद्धा दृढ होनेमें सहायता मिलती है ।

आध्यात्मिक वाङ्मयसे लोगोंको केवल वेद, उपनिषदादि ग्रंथोंका विचार आता है; क्योंकि इतने ही शब्द उन्होंने सुने हैं । हिन्दू धर्मका आध्यात्मिक वाङ्मय अथाह है और इसमें क्या कुछ अंतर्भूत है, इस संबंधमें अनेक लोग अपरिचित ही रहते हैं । इस अथाह वाङ्मयकी जानकारी सबको मिले, इस हेतु प्रस्तुत ग्रंथमें वेदोंसे संबंधित जानकारी, वेदका महत्त्व, उद्देश्य, वेदविभाजन, विभाग, वेदके विभिन्न अंग इत्यादिकी जानकारी दी है ।

ब्राह्मणग्रंथ एवं उपनिषदोंका अभ्यास इसलिए महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि इनमें अनेक आध्यात्मिक सिद्धांत विस्तारपूर्वक दिए गए हैं; साथ ही दर्शनसे परिचित करवाया गया है । स्मृति अर्थात धर्मशास्त्रके विविध अंगोंकी जानकारी भी इसी ग्रंथमें दी गई है, उदा. महत्त्व, विशेषताएं, संख्या, सत्यता, रचनाकाल, श्रुति (वेद) एवं स्मृतिमें भिन्नता, विविध स्मृतिग्रंथ और ग्रंथकार इत्यादि । इन ग्रंथोंमें महर्षि व्यास और आदि शंकराचार्यजीके दिव्य कार्यसे पाठक परिचित होंगे, जिससे उन महर्षियों की श्रेठताका भान होगा । धर्मके यथार्थ स्वरूपको जानने हेतु तत्संबंधित तात्त्विक जानकारी सनातनके ग्रंथ 'धर्म'में दी गई है ।

इस ग्रंथको पढकर अधिकाधिक लोग धर्मपरायण (धर्माचरणी) हों, उनमें साधना करनेकी प्रेरणा निर्माण हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । **- संकलनकर्ता**